



ISSN: 2456-4419

Impact Factor: (RJIF): 5.18

Yoga 2017; 2(2): 305-307

© 2017 Yoga

www.theyogicjournal.com

Received: 29-05-2017

Accepted: 30-06-2017

डॉ. विरेन्द्र कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर योगा डिपार्टमेंट
सी0आर0एस0 यू0 जीन्द, हरियाणा,
भारत

मानव कुमार

एम0 ए0 योगा शोध छात्र
सी0आर0एस0 यू0 जीन्द, हरियाणा,
भारत

यौगिक ग्रंथों में प्रकृति का स्वरूप

डॉ. विरेन्द्र कुमार, मानव कुमार

सार-लेख

प्राचीनतम काल से ही हमारे ऋषियों, महर्षियों तथा मुनियों ने जीवन के सर्वोत्तम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया है ताकि इस मानव देह का उद्देश्य पुलकित हो सके और उस परम सत्ता। परमात्मा का आत्मसाक्षात्कार हो सके उसके लिए योग। योगांगों को सर्वोत्तम साधन एवं पद्धति बताया गया है ताकि मन। शरीर व आत्मा के तादम्यता को प्रतिष्ठित किया जा सके। इसके सन्दर्भ प्रकृति अहम् भूमिका निभाती है। प्रत्येक मनुष्य अपनी प्रकृति को भली - भाँति से जानकर व मनन कर अपने भौतिक स्तर व मानस स्तर को भली - भाँति प्रकार से समझ सकता है।

यह हमारे शारीरिक स्तर। मानसिक स्तर व आध्यात्मिक स्तर को प्रभावित करती है तथा जब तक इस देह में प्राण संचार उपस्थित रहता है प्रकृति का प्रभाव पूरे देह पर रहता है चाहे वह सूक्ष्म रूप से हो या उच्चतम स्तर पर प्रकृति का प्रभाव हो।

प्रकृति के द्वारा ही प्रत्येक मनुष्य का आहार-विहार, चिंतन मनन, शारीरिक ढाँचा, रहन - सहन तथा अन्य सभी पहलू सधनात्मक रूप से निर्देशित व संचालित होते हैं इन सभी पहलुओं को समझते हुए वैज्ञानिक व मनोविज्ञानिक तौर पर भी निरीक्षण किया जा सकता है। जिससे प्रकृति के स्वरूप, गुणों व विभिन्नताओं को भली-भाँति प्रकार से समझा जा सके व योग साधना मार्ग पर चलने में सहायक सिद्ध हो सके ताकि परम उद्देश्य को प्राप्त करने में सुगमता हो सके। आज के नवयुग में प्रत्येक जन-मानस का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हुआ इसका मुख्य कारण लोगों की दिनचर्या, रहन - सहन, आहार - विहार इत्यादि घटकों को बताया गया है जिसके परिणामस्वरूप आज विश्व नई - नई व्याधियों का सामना कर रहा है।

इसके लिए निरन्तर प्रयास भी जारी किए जा रहे हैं लेकिन पूर्णतया सफलता हासिल नहीं हुई है कहीं ना कहीं आज इतनी वैज्ञानिकता व आधुनिकता के कारण भी समाज असहाय महसूस करता है लेकिन एक तथ्यों को ध्यान में रखकर इन समस्याओं का निवारण किया जा सकता है।

प्रत्येक मनुष्य इस धरा धरती पर जन्म लेता है तो वह अपने शरीर के साथ प्रकृति को भी साथ लेकर पैदा होता है अर्थात् प्रत्येक मनुष्य (सत्तोगुण, रजोगुण, तमोगुण) प्रकृति का सम्मिलित होता है उसमें सत्व, तम की प्रधानता, कमी, सत्तोगुण की प्रधानता भी हो सकती है।

यह सब प्रत्येक मनुष्य का व्यवहार आहार-विहार, क्रिया-कलापों व चेतनता का स्तर इत्यादि संबंधित घटकों को प्रदर्शित करता है तथा पूरी उम्र तक प्रकृति का चक्र चलता रहता है तथा व्यक्ति प्रभावित होता रहता है।

कुट शब्द: प्रकृति, आध्यात्मिक, निरपेक्ष, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, पिण्ड, कांक्षा

प्रस्तावना

प्रकृति क्या है: प्रकृति शब्द दो शब्दों के मेल से बना है।

प्र + कृति

प्र का अर्थ विशेष है तथा कृति का अर्थ किया गया है जो विभाव में जाकर विशेष रूप से ही की गई चीज ही प्रकृति है।

प्रकृति एक लडू जैसी है। लडू यानि क्या? डोरी लिपटति है वह सर्जन, डोरी खुले तब घूमता है वह प्रकृति है डोरी लिपटति है तब कलात्मक ढंग से ही खुलेगी। बालक हो तब भी खाते समय निवाला क्या मुँह में डालने की बजाय कान में डालता है? साँपिन मर गई हो तब भी उसके अंडे टूटने पर उनमें से निकलने वाले बच्चे निकलते ही फन फैलाने लगते है। तुरन्त ही। यह प्रकृति ही है या प्रकृति का अजूबा।

श्री कृष्ण भगवान ने कहा है कि यह जगत भगवान ने नहीं बनाया है लेकिन स्वभाविक रूप से बन गया है।

सामान्य शब्दों में प्रकृति एक प्राकृतिक पर्यावरण है जो हमारे आसपास है हमारा ध्यान देती है हर-पल पालन पोषण करती है। ये हमारे चारों तरफ एक सुरक्षात्मक कवच प्रदान करती है।

Correspondence

विरेन्द्र कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर योगा डिपार्टमेंट
सी0आर0एस0 यू0 जीन्द, हरियाणा,
भारत

प्रकृति के प्रकार

प्रकृति को सभी साहित्यिक एवं यौगिक ग्रंथों में मूलयता तीन प्रकार का बताया गया है।

1 सत्तोगुणी 2 रजोगुणी 3 तमोगुणी

सत्तोगुणी प्रकृति

सत्व गुण प्रकृति का प्रथम गुण/तत्व/घटक है इसकी अपनी कार्यशीलता होती है सत्तोगुणी प्रकृति वाला मनुष्य सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य का पालना निष्ठापूर्वक करता है वह परमेश्वर में विश्वास रखने वाला तथा उपासक के रूप में भूमिका निभाता है यह गुण शारीरिक व मानसिक स्थिरता प्रदान करता है ताकि साधना मार्ग पर अग्रसर हो सके। सत्तोगुणी व्यक्ति सात्विक आहार-विहार, भगवन चिन्तन मनन व परमात्मा प्राप्ति की ओर अग्रसर होता है तथा निरन्तर उसके मार्ग पर चलता है क्योंकि वह चिन्त एकाग्र की अवस्था को प्राप्त कर चुका होता है।

सत्तोगुणी प्रकृति वाले मनुष्य को आसानी से पहचाना जा सकता है क्योंकि वह सभी क्रिया-कलापों को भगवन नाम लेकर उस परम-पिता परमात्मा को अर्पण करता चलता है वह स्वयं को एक निमित्त मात्र समझकर अपना कर्तव्य पूरा करता है ऐसा मनुष्य दिव्यकान्ति युक्त व गुणशाली व अद्वितीय आभा से ओत प्रोत होता है सत्व गुण मनुष्य में विद्या का ज्ञान प्रदान जीवन को सुगमता पूर्वक मार्ग में ले जाकर प्रपंचों को दूर करता है तथा एकाग्रता व स्वभाविक स्थिति उत्पन्न कर मनुष्य को मोक्ष कैवलय की तरफ अग्रसर करता है।

रजोगुणी प्रकृति

रजोगुणी प्रकृति मनुष्य में चंचलता व सक्रियता उत्पन्न करती है इसकी उपस्थिती से मन में राग, द्वेष, लोभ व ईर्ष्या उत्पन्न होती है रजोगुण की प्रधानता क्रियाशीलता दुःख की ओर अग्रसर करती है लेकिन शिव संहिता के अन्तर्गत रजोगुण प्रदान करने वाली विद्या को सरस्वती का दर्जा। पद दिया गया है इससे प्रकाशित ही चेतन्य ब्रह्म कहलाता है इस प्रकार रज गुण एक नकारात्मक पक्ष को प्रदर्शित भी करता है लेकिन प्रकृति चक्र में रज गुण की भी अहम भूमिका है। क्योंकि रजत्व को सक्रिय बताया गया यह कभी तो सत्व गुण की ओर तथा कभी तमो गुण को साथ मिलकर अपनी सक्रियता व चंचलता को प्रदर्शित करता है।

रजोगुण के कारण ही सत्व गुणी व्यक्ति में एकाग्रता में विध्न व परम अवस्था प्राप्ति में रुकावट पैदा होती है साथक रजो गुण को समझकर व जानकर आगे योग साधना मार्ग पर आगे बढ़ सकता है।

इसी प्रकार रजोगुण अपनी सक्रियता तमो गुण के साथ ही प्रदर्शित करता है जब व्यक्ति में आलस्य, प्रमाद, क्रोध, लोभ व अज्ञान का अभाव व मनुष्य पूर्णतया राक्षसी प्रकृति का बन जाता है।

तमोगुणी प्रकृति

यह प्रकृति का तीसरा प्रकार है तमो गुण की अपनी विशेषता होती है इससे मन में नकारात्मक, आलस्य, निद्रा व दुविधा की स्थिति होती है यह एक मानस स्तर पर होता है लेकिन शारीरिक स्तर पर तमोगुणी प्रकृति वाला मनुष्य मांसाहारी अर्थात् मास, मीट इत्यादी जीवों का भक्षण करने वाला होता है जिसके कारण शरीर का आकार भी मोटा होता है।

तमो गुणी प्रकृति में सत्व व रज तत्व गौण/सूक्ष्म होता है तब तमोगुणी प्रवृत्ति/प्रकृति का विकास होता है तथा स्वयं में द्रव्य रूप है तथा मोह उत्पन्न करता है जिससे व्यक्ति मोहवश होकर अपने कर्तव्य सीमा का उल्लंघन कर निष्कृष्ट कार्य करता है तथा लोक मान मर्यादा का ध्यान रखते हुए अपनी इच्छाओं, कामनाओं व वासनाओं में पूर्णतया से लगा रहता है।

ऐसी प्रकृति का मनुष्य मूलयता: राक्षसी प्रवृत्ति/चिंतन मनन व आहार विहार भी राक्षसी प्रवृत्ति का होता है।

ऐसा मनुष्य भूत-प्रेत व चण्डालों का उपासक होता है वह सिद्धियों द्वारा प्राप्त शक्ति का प्रयोग जन-कल्याण में न कर जन-साधारण को हानि व अपनी इच्छा पूर्ति के लिए करता है।

प्रकृति की विशेषताएँ

सिद्धसिद्धान्त पद्धति में प्रकृति के बारे में बताया गया है।

“आशा तृष्णा स्पृहा कांक्षा मिथ्या इति पंच गुणा प्रकृतिः॥

आशा से तात्पर्य भविष्य में किसी फल, पद, सम्पत्ति, इत्यादि का मन में निरन्तर रहना। तृष्णा कुछ भी धन, सम्पत्ति, दौलत, सन्तान, प्रतिष्ठा आदि पाने की कामना। स्पृहा कुछ भी प्राप्त करने की स्थायी कामना चाहे वह भौतिक पदार्थ सम्बंधी हो या आध्यात्म से सम्बंधित हो।

कांक्षा से तात्पर्य अमुक पदार्थ पद, प्रतिष्ठा, धन-दौलत, सुख इत्यादि मेरे पास सदा बने रहे इस प्रकार की मनोवृत्ति।

मिथ्या से तात्पर्य अपनी योग्यता व सामर्थ्य, परिश्रम से भी जो प्राप्त न हो सके उसे प्राप्त करने की इच्छा/कामना।

“इति पञ्च गुणा प्रकृति”

प्रकृति का निर्माण

सांख्य के अनुसार दो स्वतन्त्र तत्वों को बताया गया है (1) प्रकृति जो जड़त्व है (2) पुरुष जो चेतन स्वरुपा है।

प्रकृति ही सम्पूर्ण जड़ पदार्थों की जन्नी है वह स्वयं अजन्मा है क्योंकि इसका कोई कारण नहीं व साक्ष्य नहीं है जगत का आदि कारण होने से इसे “मूलाप्रकृति” कहा जाता है यह पूरे संसार का कारणभूत प्रथम मौलिक तत्व है इसे प्रधान कहा जाता है।

प्रकृति में विकृति कारण साक्षेप होते हैं जबकि प्रकृति कारण निरपेक्ष होती है प्रकृति स्वतन्त्र एवं विषयक तथा अतीन्द्रिय होने से प्रत्यक्षीकरण सम्भव नहीं है।

प्रकृति पिण्ड की उत्तपत्ति के बारे में सिद्धसिद्धरुत पद्धति में बताया गया।

तद् ब्रह्माणः सकाशाद् अवलोकनेन नरनारीरुपः प्रकृति पिण्डः समुत्पन्नः॥

तथ्य पञ्च - पञ्चात्मकं शरीरं ॥ 3611 ॥

ब्रह्म के देखने मात्र से ही पंच महाभूतों (आकाश, वायु, जल, पृथ्वी) वाली स्त्री व पुरुष रूप शरीर उत्पन्न हुआ है। इस प्रकार से समस्त प्रकृति का निर्माण होता है।

अन्य ग्रन्थकार श्री स्वामी ओमानन्द तीर्थ ने पातजल योगप्रदीप में वर्णन करते हुए बताया है:-

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सृयते सचराचरम्।

हेतुनानेन कौन्तेय जगद्धि परिवर्तते॥

हे कुन्ती पुत्र। मेरी (परमात्मत्व की) अक्षयता से प्रकृति चराचर जगत को रचती है इसी कारण जगत सदा परिवर्तित रहता है।

प्रकृति का विघटन

जिस प्रकार से प्रकृति का निर्माण/सर्ग होता है उसी प्रकार प्रकृति का विघटन भी होता है इसका वर्णन इस प्रकार से है

प्रकृति सत्व गुण, तमो गुण रजो गुण से उत्पन्न द्रव्यों से निर्मित होती है इसलिए सुख दुख सभी मोहजनक हैं किन्तु अयेतन होने से सुख व दुख का अनुभव नहीं कर सकती है अयेतन होने के कारण भी प्रकृति निरन्तर सक्रिय एवं परिणामवादी है इसमें सुरूप व विरुप होता रहता है समस्त संसार उसी से उत्पन्न है निर्माण/सर्ग के समय जगत प्रकृति के गर्भ से पैदा होता है तथा प्रलय के समय पुनः प्रकृति के गर्भ में विलीन हो जाता है।

प्रकृति के गुणों के कारण ही क्षोभ विक्षोभ/विकास की प्रणाली शुरू होती है यह सब पुरुष के चैतन्य स्वरूप के कारण ही होता है प्रकृति तो जड़ है वह प्रकाश/चेतन्य से ही क्रियाशील होती है।
जब प्रकृति के गुणों में क्षोभ होता है तो प्रकृति का नाश होता है।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि प्रकृति को समझकर व उसके गुणों भली-भांति परिचित होकर ही उस परम ध्येय/परमात्म तत्व को प्राप्त कर आत्म साक्षात् किया जा सकता ताकि मनुष्य पतन के रास्ते को छोड़कर एक सात्विक जीवन पद्धति को अपनाकर अपना उद्धार के साथ-साथ समाज का कल्याण भी कर सकता है।

सन्दर्भ सूची

- 1 स्वामी निरजनानन्द सरस्वती, धारणा दर्शन, योग पब्लिकेशन ट्रस्ट मुंगेर (बिहार) ISBN – 81 – 86336 – 21 – 4 Page No. – 361. 362
- 2 स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, समस्या पेट की समाधान योग का, योग पब्लिकेशन ट्रस्ट मुंगेर (बिहार) ISBN – 81 – 85787 – 54– 9 Page No. – 125
- 3 योगेश्वर श्री गोरक्षनाथप्रोत, सिद्धसिद्धान्त पद्धति, चौखम्भा ओरियन्टल
- 4 परमहंस स्वामी अनन्त भारती, शिव संहिता (योगशास्त्र) चौखम्भा ओरिन्टलिया।
- 5 योगवसिष्ठ, गीताप्रेस, गोरखपुर Page No. – 200
- 6 ओमानन्द तीर्थ, पांतजल योग प्रदीप
- 7 डॉ० अक्षय कुमार गौड़, श्रीमद्भगवद्गीता, ड्रोलिया पुस्तक भण्डार, हरिद्वार प्छ – 978.81.920092.4.7 Page No. – 14
- 8 डॉ विजयपाल शास्त्री, योग विज्ञान प्रदीपिका, सत्यम् पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली। ISBN – 81 .88134.57.0 Page No. 34 संस्करण 2006-20016
- 9 सवालिया बिहारी वर्मा, पंतजलि योग, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन ISBN – 978 .81.7555.544.0 Page No. 34 संस्करण - 2013
- 10 ईश्वर कृष्ण, सांख्यकारिका, चौखम्भा पब्लिकेशन संस्करण - 2009